B.A. II Part 19/2/21 डॉ० अनन्या कुमार
Hindi Hons क्रमशः:- एम० एस० कॉलेज, सहारसा

होती है भारतेन्दु युग के अपरान्त इनके निबन्धों में मार्मिक व्यंग्य का विकसित रूप दिखाई पड़ता है। यहाँ शांतिप्रिय द्विवेदी का नाम भी उल्लेखनीय है जो स्वच्छंदता और संवेदनशील निबन्धकार के लिए अपेक्षित है पर द्विवेदी जी में मौजूद है छायावाद के चार कवि को साहित्यिक और आलोचनात्मक निबन्ध लेखकों के रूप में स्वीकार किया जाता है इनके निबन्ध भूमिका एवं पुस्तक रूप में प्रकाशित उनके निबन्धों हिन्दी साहित्य की अमूल्य और भावुक निधि के रूप में स्वीकार किया जा सकता है प्रसाद और निराला के निबन्ध सर्वाधिक उल्लेखनीय है

भावात्मक शैली के निबन्धकार में वियोगी हरि, माखनलाल चतुर्वेदी आदि प्रसिद्ध है यात्रा संबंधी निबन्ध लेखकों में सत्यदेव परिव्राजक, राहुल और देवेन्द्र सत्यार्थी प्रमुख है श्रीराम शर्मा के शिकार संबंधी निबन्ध भी हिन्दी में अपने ढंग का अकेला निबन्ध है जैनेन्द्र ने अनेक निबन्ध लिखे हैं। वे दार्शनिकता के बोझ से बोझील हो गये हैं। इनके अतिरिक्त भदन्त आनन्द भगवती चरण वर्मा आदि ने भी निबन्ध लिखे गये है। हरिशंकर परसाई, जोशी, रविन्द्र नाथ त्यागी, के० पी० सक्सेना आदि के हास्य-व्यंग्य निबन्ध काफी लोकप्रिय होते गये। आज स्थिति यह है कि अधिकांश निबन्ध साहित्यिक लिखे गये। अधिकांश निबन्ध साहित्यिक आलोचना के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं। वस्तुतः यह एक स्वतंत्र विधा के रूप में निबन्ध साहित्य का विकास नहीं हो रहा है कभी कभी दो - चार सुन्दर निबन्ध देखने को मिल जाते हैं।